बुद्धिमत्ता : प्राकृतिक अथवा अर्जित

जॉन व्हाइट

बच्चों के जानने-समझने और उनके व्यवहार को लेकर अक्सर उन पर बुद्धिमत्ता का तमगा लगाया जाता है कि फलां बच्चे में बुद्धिमत्ता कम है या अधिक है लेकिन सवाल है कि बुद्धिमत्ता होती क्या है ? कैसे अर्जित होती है ? क्या यह प्राकृतिक है ? क्या इसे सामान्य व्यवहारों के संदर्भ में समझा जा सकता है या विशिष्ट व्यवहारों के संदर्भ में ?; इन्हीं सवालों पर जॉन व्हाइट का यह पर्चा विचार करता है।

मेरा ख्याल है कि प्रकृति-पोषण मुद्दे के तर्क पर चर्चा करने के लिए पहला काम यह परिभाषित करना होगा कि मुद्दा क्या है। यह काम आसान नहीं है और शायद हमें यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि पहले से हम जानते हैं कि मुद्दे में यहां एक ही चीज है। शायद अनेक मुद्दे हैं या शायद कोई नहीं है। प्रकृति की तरफ से यथार्थ में ऐसा लगता है कि कम से कम दो भिन्न प्रकार के दावे हैं, आवश्यक नहीं कि वे एक-एक दूसरे से मेल न खाते हों (1) पहला, बुद्धिमत्ता स्वभाविक योग्यता है (बर्ट का विचार), (2) दूसरा, बुद्धिमत्ता में व्यक्तिगत अंतर अधिकांशतः आनुवांशिक कारणों से तय होते हैं : यह 'मुख्य धारा' के लोगों जैसे जेनसन, आइसेंक, बचर और बर्ट (फिर से) का विचार है। फिर मुद्दा क्या है ? क्या मुद्दा यह है कि बुद्धिमत्ता स्वभाविक योग्यता है अथवा नहीं है ? या बुद्धिमत्ता में व्यक्तिगत अंतर को निर्धारित करने वाले स्वभाविक कारक पर्यावरण के कारकों से अधिक प्रभावशाली हैं ? क्या कोई पोषण का पक्षधर यह दावा करेगा कि ये अंतर ज्यादातर पर्यावरण के प्रभावों से ही उत्पन्न होते हैं ? क्या वह परिमापन के इस पूरे प्रयास पर आपत्ति करेगा ?

(I)

यह सब बहुत अस्पष्ट है। चीजों के अलग-अलग करने की दृष्टि से बुद्धिमत्ता की अवधारणा के विवरण को मैं, आवश्यकतानुसार, संक्षेप में देना चाहूंगा। मुझे उम्मीद है कि यह बहुत ज्यादा सिद्धांतवादी नहीं होगा। रायल की मन की अवधारणाओं से लिया गया एक सामान्य विचार यह है कि बुद्धिमत्ता एक मनोवृत्ति दर्शाने वाला शब्द है और मनोवृत्ति सूचक शब्दों वाले

वक्तव्यों का व्यवहार संबंधी काल्पनिक वक्तव्यों में विश्लेषण किया जा सकता है। जैसा कि टी.आर. माइल्स लिखते हैं ''बुद्धिमान है'' को समान अर्थ में कहा जा सकता है ''यदि क को खास परिस्थितियों में रख दिया जाए तो वह एक खास प्रकार की प्रतिक्रियाएं करेगा। उदाहरण के लिए, यदि वह किसी समूह चर्चा में उपस्थित है तो उपयुक्त टिप्पणियां करता है, यदि उसे कठिन शब्द पहेली दी जाती है तो वह उसे प्रायः हल कर लेता है आदि-आदि।'' माइल्स की एक खासियत है बुद्धिमत्ता का 'यदि-तो' विश्लेषण जो इसे मार्क फिशर और स्वयं रायल से अलग करता है, वह है बुद्धिमत्ता की सामान्य प्रकृति के प्रति उसकी जाहिरा प्रतिबद्धता। जहां रायल तीरंदाज और फिशर गोल्फर की बुद्धिमत्ता की बात करते हैं वहीं माइल्स की बुद्धिमत्ता व्यक्ति के द्वारा एक-दूसरे से बहुत भिन्न गतिविधियों में प्रदर्शित करनी होती है। इस मुद्दे को लेने के पहले कि बुद्धिमत्ता सामान्य है या विशिष्ट, मैं माइल्स और सभी की एक महत्त्वपूर्ण समस्या के बारे में, अवधारणा के 'यदि-तो' विश्लेषणों के बारे में बतलाना चाहूंगा। समस्या है : हम माइल्स के वक्तव्य के अंत में 'और आदि-आदि' को कैसे समझें ? निःसंदेह और आगे के उदाहरणों की एक लम्बी सूची दी जा सकती है लेकिन यह अनिवार्यतः अधूरी होगी। ऐसा लगता है कि इस सूची को जो चीज सार्थक बनाती है वह यह कि इसमें दी गई सभी चीजें एक सामान्य फार्मूला के अनुप्रयोग हैं ''यदि वह Y की परिस्थितियों में होता तो बुद्धिमत्तापूर्वक कार्य करता।'' हम लौटकर वहीं आते हैं। यह स्पष्ट है कि बुद्धिमत्तापूर्ण व्यक्ति की अवधारणा को बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य की अवधारणा के अर्थ में समझना होगा। यह निष्कर्ष 'सामान्य' बुद्धिमत्ता की धारणा के लिए समस्या पैदा करता है। यदि कोई किसी विशिष्ट परिस्थिति में बुद्धिमत्तापूर्वक कार्य करता है, उदाहरण के लिए, शतरंज का खेल खेलने में, तब बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य करने से संबंधित अन्य दूसरी तरह की स्थितियों का संदर्भ देना जरूरी नहीं है समूह चर्चा, शब्द पहेली हल करना आदि। निश्चित ही कोई हमेशा ही अपनी अवधारणा में बुद्धिमत्तापूर्ण आदमी की योग्यता के बारे में चारों तरफ की योग्यता संबंधी बातें लिख सकता है लेकिन यह भिन्न प्रकार की अवधारणा से परिचय कराना होगा।

मैंने ऊपर वर्णन किया था कि 'और आदि-आदि' में माइल्स के लिए ही समस्या नहीं है बल्कि यह समस्या सभी 'यदि-तो' विश्लेषणों के बारे में भी है। उदाहरण के लिए, रायल के विश्लेषण के बारे में भी यही समस्या है, यदि वह 'यदि-तो' प्रकार का है। रायल के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण होना विशिष्ट गतिविधि पर आधारित है। आइए जांच के लिए एक उदाहरण लेते हैं। रायल के सैनिक का जो अपनी बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल एक बिन्दु पर सही निशाना लगाने के लिए करता है : 'यह सौभाग्य था या कौशल था ?' यदि उसके पास कौशल है तो वह दोबारा निशाने तक या उसके करीब पहुंच सकता है। तब भी जब हवा तेज हो जाए, दूरी में परिवर्तन हो जाए और निशाने का बिन्दु गतिशील हो जाए। 'यदि-तो' योजना के अंतर्गत, X का 'बुद्धिमत्तापूर्वक निशाना लगाना' समान है, 'यदि हवा तेज हो जाती है तो X A की तरह कार्य करता है, यदि दूरी बदलती है तो B की तरह कार्य करता है आदि। 'और आदि-आदि' अभी समस्यामूलक है जैसा कि माइल्स के साथ था लेकिन रायल के विवरण में एक और कठिनाई है। क्योंकि ऊपर की समानता एक ऐसे व्यक्ति द्वारा प्राप्त की जा सकती है जिसने कई प्रकार के अभ्यास सीखे हों जिन्हें विभिन्न परिस्थितियों में बिलकुल यांत्रिक तरीके से प्रयोग किया जा सकता हो। एक परिस्थिति का एक ही हल हो और दूसरी का दूसरा। हवा की तेजी बढ़ने पर वह A हल सीख सका हो, वह भी इस प्रकार कि उसने इसका संबंध हल B से जोड़ने का कभी विचार न किया हो जो निशाने की दूरी में बदलाव से संबंधित है आदि, आदि। अभ्यासी व्यवहार का हर बिन्दु एक-दूसरे से अलग अस्तित्व में रखा और देखा जा सकता है।

इस प्रकार का आदमी कोई बुद्धिमत्तापूर्ण निशानेबाज नहीं होगा बल्कि एक ऐसा व्यक्ति होगा जिसने सिर्फ कुछ अभ्यास सीख लिए थे। यदि वह बुद्धिमत्तापूर्वक कार्य कर रहा होता तो उसने एक परिस्थिति में जो किया, उसे उसने दूसरी परिस्थिति में जो किया उससे संबंध जोड़ा होता। रायल में ऐकिकता के सिद्धांत की कमी है, कुछ ऐसी चीज जो विभिन्न परिस्थितियों में किए गए व्यवहार के भिन्न अंशों को एक साथ रख सके (कई प्रकार से बुद्धिमत्ता का उनका सिद्धांत ह्यूम के व्यक्तित्व के सिद्धांत से अलग नहीं है)। व्यक्ति जो बुद्धिमत्तापूर्वक तर्क करता है वह न केवल अस्पष्ट अभिव्यक्त बिन्दुओं को पुनः सुधारकर अभिव्यक्त करने के लिए तैयार रहता है, घालमेल के प्रति सावधान..., सावधानी बरतते हुए आसानी से गलत सिद्ध किए जाने वाले निष्कर्षों पर विश्वास न करे, आपत्तियों का सामना करने के प्रति सचेत हो आदि। पुनः ये चीजें वह

असंबद्ध रहते हुए भी कर सकता है, बुद्धिमत्तापूर्वक तर्क करते हुए इस प्रकार के प्रत्येक व्यवहार को सत्य का अनुसरण करने के सामान्य उपक्रम के रूप में देखना चाहिए। और बिना यह बताए कि कर्ता जो कर रहा है उसके बारे में क्या समझता है, भिन्न परिस्थितियां जिनमें वह है उन्हें कैसे देखता है और उनके प्रति क्या अनुक्रिया करता है। उक्त उपक्रम के बारे में कोई विवरण नहीं दिया जा सकता। समझ को बुद्धिमान तर्क कर्ता अपने सब क्रियाकलापों को अपने केन्द्रीय सरोकार से जुड़ा हुआ देखता है। हम उन्हें दोबारा इस तरह रख सकते हैं : वह अपने अस्पष्ट रूप से अभिव्यक्त बिन्दुओं को जरूर अस्पष्ट रूप से अभिव्यक्त ही देखता है (और इस तरह सत्य के लक्ष्य को बाधित करते हुए); आसानी से गलत सिद्ध हो जाने वाले निष्कर्षों को भी आसानी से गलत सिद्ध होने वाला ही देखता है (और इसलिए सत्य के लक्ष्य की ओर आगे नहीं बढ़ रहा होता) आदि। संक्षेप में, इसे अनेक प्रकार की चीजें देखनी होती हैं जो सत्य के लक्ष्य को आगे बढ़ाने वाली चीजों की श्रेणी में आ भी सकती हैं, नहीं भी आ सकती। इतना ही नहीं : जो चीजें वह देखता है कि इस श्रेणी में आती हैं, वे यथार्थ में अनिवार्यतः आती हैं। उदाहरण के लिए, यह बुद्धिमत्ता की पहचान नहीं है कि स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त बिन्दु को अस्पष्ट रूप में देखना।

कुछ तरीकों से व्यवहार करने की प्रवृत्तियों की शक्ल में बुद्धिमत्ता का विश्लेषण करते हुए रायल एक बहुत विशिष्ट गुण छोड़ देते हैं जिसकी वजह से हम ऐसे व्यवहार को बुद्धिमत्तापूर्ण कह सकते हैं : जो वह कर रहा है, उसके बारे में कर्ता की अन्तर्दृष्टि। 'यदि-तो' विश्लेषण की दो कठिनाइयों को अब हम एक साथ रखते हैं जिन्हें हमने रेखांकित किया है, हम देखते हैं कि (i) बुद्धिमत्तापूर्ण व्यक्ति को किसी बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य की अवधारणा के आधार पर समझा जा सकता है। (ii) किसी बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य की अवधारणा को इस अवधारणा के आधार पर समझना होता है जब हम एक चीज को दूसरी से संबद्ध देखते हैं। इस निष्कर्ष में निहित है कि बुद्धिमत्ता की व्यवहारवादी दृष्टि असफल रहेगी : इसमें निहित सजगता को ध्यान में रखना होगा अर्थात् 'देखना- जैसे'।

इस विचार को आरोपित करने में कठिनाइयां हैं जो मैं रायल के साथ जोड़ रहा हूं। यद्यपि वह निजी महत्त्वपूर्ण घटना की बजाय बाह्य व्यवहार को लेकर बुद्धिमत्ता का विश्लेषण करना

हम आमतौर पर उसी व्यवहार को 'बुद्धिमत्तापूर्ण' कहते हैं जो किसी तरह सामान्य अपेक्षाओं के परे होता है। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति अपनी समझ को ऐसे फैसलों के लिए काम में लेता है जो असाधारण रूप से तुरत-फुरत किए जाते हैं या अत्यंत विवेकी और जटिल होते हैं। यह आपत्ति इस प्रकार के अवसरों पर ध्यान केन्द्रित करती है जब हम 'बुद्धिमत्तापूर्ण' शब्द का प्रयोग करते हैं।

चाहते हैं, यह स्पष्ट नहीं है कि उनका आशय किस प्रकार की निजी महत्त्वपूर्ण घटनाओं से है। क्या उनका आशय किसी भी निजी महत्त्वपूर्ण घटना से है ? यदि ऐसा है तो इसमें जिस सजगता का ऊपर उल्लेख किया है उसे शामिल करना होगा या उनका आशय केवल 'बौद्धिक' महत्त्वपूर्ण घटनाओं से है अर्थात् सैद्धांतीकरण और विचार-विमर्श के क्रियाकलाप। यह स्पष्ट है कि उनका आशय कम से कम इन्हीं से है और इस सीमा तक बुद्धिमत्ता के 'औपचारिक सिद्धांत' के प्रति उनकी आपत्तियां अच्छी तरह से प्रस्तुत हुई हैं : विचार-विमर्श की भाषा में बुद्धिमत्ता विश्लेषणीय नहीं है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि यह अन्य निजी महत्त्वपूर्ण घटनाओं की शब्दावली में भी विश्लेषणीय नहीं है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि यह अन्य निजी महत्त्वपूर्ण घटनाओं की शब्दावली में भी विश्लेषणीय नहीं है, उदाहरण के लिए, संबंधों को देखना। यह स्पष्ट नहीं है कि रायल परवर्ती दावे को कहां तक स्वीकार करेंगे। वे अपने बुद्धिमत्तापूर्ण तर्क कर्ता के बारे में कहते हैं कि 'उसकी संक्रियाओं की सभी अन्य विशेषताओं के अंतस्थ एक मूल विशेषता है कि वह विवेकपूर्ण तर्क देता है अर्थात् वह झूठ को किनारे कर देता है और मामले से संबंधित उपयुक्त,

प्रमाणिक तथ्यों और निष्कर्षों को प्रस्तुत करता है' (पृ. 48)। वे आगे कहते हैं, 'जो बुद्धिमत्तापूर्ण तर्क करने के बारे में सच है। उपयुक्त संशोधनों के साथ वह अन्य बुद्धिमत्तापूर्ण संक्रियाओं के बारे में भी सच है। मुक्केबाज, शल्य चिकित्सक, कवि और विक्रयकर्ता अपने विशेष कामों के निष्पादन में विशेष मानदण्ड अपनाते हैं, क्योंकि वे अपना कार्य ठीक से करना चाहते हैं' (पृ. 48)। इन दोनों उद्धरणों में लगता है कि एक बुद्धिमत्तापूर्ण संक्रिया वह है जहां कर्ता की दृष्टि में उसका कोई लक्ष्य होता है और वह उस लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक कुछ नियमों का पालन करता है। वह जो करता है, तब वह उसे लक्ष्य को प्राप्त करने के सहायक के रूप में देखता है।

रायल के सिद्धांत की व्याख्या करने की कठिनाइयों को मैं यहीं छोड़ता हूं। लेकिन बुद्धिमत्तापूर्ण संक्रियाओं के बारे में अभी जो टिप्पणियां की हैं वे दूसरी समस्या खड़ी करती हैं। बुद्धिमत्तापूर्ण संक्रियाएं कहां तक लक्ष्य निर्देशित हैं ? पीटर्स बुद्धिमत्ता और लक्ष्य द्वारा निर्देशित होने में आवश्यक संबंध होने का दावा करते हैं, इन आधारों पर कि परिवर्तन से संबंधित अनुकूलनीयता या प्रासंगिक बदलाव (लक्ष्य निर्देशित गतिशीलता का) उस चीज का एक हिस्सा है जिसे हम बुद्धिमत्ता कहते हैं। लेकिन मुझे बिलकुल नहीं पता है कि बुद्धिमत्तापूर्ण संक्रियाएं जरूरी तौर पर लक्ष्य निर्देशित अथवा व्यवहार में बदलाव से प्रभावित होती भी हैं या नहीं। कुछ मामलों में उन्हें देखा जा सकता है, उदाहरण के लिए, बुद्धिमत्तापूर्ण स्क्वाश खेलने में या बुद्धिमत्तापूर्ण सेनापतित्व में। अन्य मामलों में ये दोनों ही नहीं मिलते। पावलोव के कुत्ते को क्या हो रहा था उसकी एक व्याख्या यह हो सकती है कि उसने खाने के संकेतों के रूप में घंटी को सुनकर बुद्धिमत्ता का प्रदर्शन किया, लेकिन उसने लक्ष्य के सिलसिले में अपना व्यवहार नहीं बदला क्योंकि उसने कोई व्यवहार किया ही नहीं था। न ही इसलिए साधन-साध्य व्यवहार का कोई प्रश्न उठता है। यद्यपि घंटी की आवाज निश्चित रूप से कुत्ते के भूख शांत करने के लक्ष्य से संबंधित थी, यह किसी भी प्रकार से इस लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन नहीं थी।

इसके विपरीत एक दूसरी मिसाल : एक व्यक्ति ने टीके का अविष्कार करने वाले एडवर्ड जेनर पर एक अव्यावसायिक फिल्म बनाई है और अपनी पोती के लिए छोटे बच्चों का तुकबन्दी गीत पढ़ रहा है, ''दूध बेचने वाली मेरी सुन्दरी तुम कहां जा रही हो ? और तब एक पंक्ति आती है, ''मेरा चेहरा ही मेरा भाग्य है, सर'', उसने कहा। इसे वह पुराने जमाने के एक तथ्य से जोड़ता है जब दूध बेचने वाली महिलाएं चेचक से असंक्राम्य मानी जाती थीं। ऐसी चीज करना बुद्धिमत्तापूर्ण है; लेकिन एक बार फिर, यद्यपि जो संबंध वह बनाता है अपने-आपमें निःसंदेह उसके हितों से जुड़ा है, उसका बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य ऐसा कुछ नहीं करता जो लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु साधन को अनुकूल बनाने की दिशा में हो। दोनों उदाहरण वास्तव में यह दिखाते हैं कि बुद्धिमत्ता की प्रकृति को समझने का रास्ता साधन-साध्य व्यवहार की धारणा से नहीं गुजरता। निर्णय चाहे वे इंद्रियगोचर हों जैसा कि पहले मामले में, चाहे इंद्रियगोचर नहीं हों जैसा कि दूसरे मामले में, दोनों समान रूप से बुद्धिमत्तापूर्ण कहे जा सकते हैं। वह क्या है जो इन्हें और अन्य महत्त्वपूर्ण घटनाओं को बुद्धिमत्तापूर्ण बनाता है ? वह यह कि वे सभी किसी न किसी प्रकार का संबंध देखते हैं : अर्थात् अवधारणाओं का अनुप्रयोग। इतना ही नहीं यह सुनिश्चित करना होता है, उन संबंधों को देखना जो है ही नहीं और अवधारणाओं का गलत तरीके से अनुप्रयोग, ये सब बताते हैं कि कार्य निष्पादन बुद्धिमत्तापूर्वक नहीं हो रहा। बुद्धिमत्ता का मतलब है सही अवधारणा-अनुप्रयोग।

मैंने सभी अवधारणा-अनुप्रयोग को संबंधों को देखने के समकक्ष रख दिया है; और अब मुझे इस पर विस्तार से कुछ कहना होगा और इस समीकरण को न्यायोचित ठहराना होगा। कोई भी यह कहने के लिए लालायित हो सकता है, ''मैं कुछ मामलों में यह देख सकता हूं कि संबंधों के अवलोकन को अवधारणाओं के अनुप्रयोग के रूप में रखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, बुद्धिमत्तापूर्ण तर्क करने वाला अस्पष्टता के उद्घाटन को सत्य के संपोषण से जुड़ा देख सकता है। वैकल्पिक तौर पर कहा जा सकता है, वह इसे उस अवधारणा के अंतर्गत देखता है जो इस उद्देश्य को प्राप्त करने के साधन के रूप में प्रयोग की जाती है। मसलन, यदि मैं कहता हूं, 'कितना भयंकर मौसम है' तो मैं 'भयंकर मौसम' शब्दों को खराब मौसम के उदाहरण से जोड़कर प्रयोग करता हूं, इसी तरह के अन्य उदाहरणों को सामने रखते हुए। अवधारणा के सभी प्रयोगों में इसी प्रकार के संबंधों को काम में लेते हैं। लेकिन अवधारणा-अनुप्रयोग के सभी दिखने वाले संबंधों का पुनर्वर्णन नहीं हो सकता। पावलोव के कुत्ते ने खाने के साथ

घंटी का संबंध भले ही बिठा लिया हो, भाषा रहित होने के कारण, अनुप्रयोग के लिए उसके पास कोई अवधारणाएं नहीं थीं। इसके जवाब में मुझे यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि जब मैं अवधारणा का प्रयोग कर रहा हूं तो मैं भाषा का प्रयोग करने वालों के अवधारणा के अधिकार को सीमित नहीं कर रहा हूं। जहां तक पशुओं को अमुक वस्तु का अमुक बोध होता है। (जैसे कि घंटी की ध्वनि का खाने के संकेत के रूप में) तो उनके बारे में कहा जा सकता है कि उन्हें यह बोध किसी वस्तु की एक श्रेणी से संबद्ध विभिन्न विशिष्टताओं का होता है (उदाहरण के लिए, खाने के सभी संकेतों के रूप में विभिन्न विशिष्ट ध्वनियां)। मैं 'अवधारणा के प्रयोग' को इस प्रकार की आदिम श्रेणीकरण की योग्यताओं के लिए कर रहा हूं। पावलोव का कुत्ता अपनी बुद्धिमत्ता का इस्तेमाल घंटी की ध्वनि को खाने के संकेत की अवधारणा के अनुप्रयोग के लिए करता है। कुत्ते ने एक अवधारणा का अनुप्रयोग किसी शब्द के सक्रिय अर्थ में नहीं किया है। अर्थात् उसने एक अवधारणा का प्रयोग इस तरह नहीं किया जिस तरह मैंने अभी-अभी चेतावनी की अवधारणा का प्रयोग किया है। प्राइस के शब्दों में कुत्ते की अवधारणात्मक योग्यताएं बंधी हुई हैं, स्वायत्त नहीं हैं। वे किसी मिसाल की उपस्थिति में सक्रिय होती हैं; भाषा की कमी के कारण, कुत्ता मिसाल की अनुपस्थिति में अवधारणाओं का प्रयोग नहीं कर सकता।

यहां एक और आपत्ति की संभावना व्यक्त की जा सकती है। संबंधों को देख पाने में अवधारणा-अनुप्रयोग निहित हो सकता है या इसके उलट भी हो सकता है। यह सच हो सकता है कि बुद्धिमत्तापूर्वक कार्य करने के लिए संबंधों को सही रूप में देखना जरूरी होता है (या अवधारणाओं का अनुप्रयोग करना) लेकिन निश्चित रूप से बुद्धिमत्ता की यह अनिवार्य शर्त है। एक व्यक्ति जो पहली बार सार्वजनिक टेलीफोन का इस्तेमाल करता है वह जो क्रियाएं करता है उनके बीच तथा किसी के साथ बातचीत को पूरा करने के बीच बखूबी संबंध देख सकता है। लेकिन यह मुश्किल से ही कोई ऐसी चीज होगी जिसके बारे में कोई यह कहेगा कि, 'उसकी बुद्धिमत्ता का क्या कहना'। ऐसा इसलिए है कि हम आमतौर पर उसी व्यवहार को 'बुद्धिमत्तापूर्ण' कहते हैं जो किसी तरह सामान्य अपेक्षाओं के परे होता है। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति अपनी समझ को ऐसे फैसलों के लिए काम में लेता है जो असाधारण रूप से तुरत-फुरत किए जाते हैं या अत्यंत विवेकी और जटिल होते

बुद्धिमत्ता और अवधारणा पर अधिकार में संबंध है। अवधारणा पर अधिकार होने का अर्थ है अन्य चीजों के साथ रहते हुए उसके विभिन्न रूपों को एक ही रूप में देख पाना। 'लचीलापन' अवधारणा पर अधिकार का ही एक गुण है उस सीमा तक जब तक कि अवधारणा निर्माता अपनी अवधारणा को किसी एक चीज के बारे में सख्ती से लागू करने के लिए तैयार होता है या उसी प्रकार के बहुत से अन्य मामलों में।

हैं। यह आपत्ति इस प्रकार के अवसरों पर ध्यान केन्द्रित करती है जब हम 'बुद्धिमत्तापूर्ण' शब्द का प्रयोग करते हैं। लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि उस प्रकार की टिप्पणियों से अवधारणा के अर्थ पर कितना प्रकाश पड़ता है। एक दूसरा उदाहरण लेते हैं, हम लोगों की अभिप्रेरणाओं के बारे में बात करते हैं जब ऐसी कोई बात होती या हो सकती है जब कि वे क्या कर रहे हैं : हम एक अपराधी के अपराध के कारणों के बारे में पूछते हैं लेकिन उस व्यक्ति के बारे में नहीं जो एक रेस्तरां में जा रहा है। लेकिन यह तथ्य कि हम सामान्य और तुरंत समझ में आ जाने वाले लोगों की अभिप्रेरणाओं के बारे में कभी बात नहीं करते, इसका मतलब यह नहीं है कि वे जो करते हैं उसके पीछे कारण नहीं होते। एक रेस्तरां में जाने वाले व्यक्ति की प्रेरणा होती है कि वह अपनी भूख मिटाना चाहता है। यह प्रेरणा इतनी अधिक स्पष्ट होती है कि हमें उस पर बात करने की जरूरत नहीं लगती। इसी गलती के प्रति हमें सचेत रहना चाहिए (जिसे सीयरले अनावश्यक ध्यान देने की गलती कहते हैं) जब हम सामान्य अपेक्षाओं के पार जाकर बुद्धिमत्ता का विश्लेषण करते हैं। फोन करने के लिए बने खांचे में सिक्का डालना बुद्धिमत्तापूर्ण काम नहीं कहलाता है लेकिन इसमें यह

निहित नहीं हैं कि यह कार्य बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं है। एक बार फिर, किसी चीज के बुद्धिमत्तापूर्ण होने की अत्यधिक स्पष्टता इसे उल्लेख करने योग्य नहीं बनाती कि यह बुद्धिमत्तापूर्ण है। बुद्धिमत्तापूर्ण क्रियाकलाप, अभिप्रेरणा द्वारा उत्पन्न कार्यों की तरह हमारे जीवन में सर्वत्र इतने सामान्य रूप से किए जाते हैं कि वे हमें मुश्किल से ही आश्चर्यजनक प्रतीत होते हैं और हम उन्हें प्रायः यह बताने का कष्ट नहीं उठाते।

यह अंतिम बिन्दु हमारी एक और समस्या हल करने में मदद करता है। रायल के अनुसार सामान्य या एक ढर्रे का व्यवहार, जैसे कि हथियार मंगवाने का आदेश देना, चिट्ठी भेजना या चाबी से दरवाजा खोलना ऐसी चीजें नहीं हैं जिन्हें बुद्धिमत्तापूर्वक किया जा सके। मैकिनटायर के अनुसार 'बुद्धिमत्तापूर्ण' शब्द एक अर्थ में सामान्य कार्यों को सफलतापूर्वक किया जाना है। (वे बुद्धिमत्तापूर्ण के दो अन्य भावों को चिह्नित करते हैं, विस्तार में जाने की हमें यहां जरूरत नहीं है) इस पर मैं मैकिनटायर से सहमत हूं कि रोजमर्रा का व्यवहार बुद्धिमत्तापूर्ण हो सकता है लेकिन मैं इस बात से असहमत हूं कि 'बुद्धिमत्तापूर्ण' का यहां कोई और भी अर्थ है इसके सिवाय कि जो उदाहरण बुद्धिमत्तापूर्ण तर्क करने वाले के लिए प्रयुक्त होता है। दोनों में 'एकल पथगामी' और 'बहुल पथगामी' मामलों में कर्ता का व्यवहार अवधारणा द्वारा निर्देशित होता है। दोनों में ही जो वह कर रहा है और निश्चित लक्ष्यों के बीच एक संबंध देखता है। अंततोगत्वा, ताले में चाबी लगाने के बुद्धिमत्तापूर्ण और अबुद्धिमत्तापूर्ण दोनों तरीके हैं, उदाहरण के लिए, चाबी को सही ओर से सीधा पकड़ना होता है और ताले के सुराख की गोलाई को केन्द्रित रखना होता है बिना उसमें अटकाव पैदा किए। बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके में शामिल है कि ताले को सफलतापूर्वक खोलने और चाबी को लगाने की क्रिया के बीच संबंध बिठाया जाए।

यहां मैं पहले कही गई बात पर लौटता हूं। अनेक लेखकों ने तर्क दिया है कि बुद्धिमत्ता की अवधारणा में लाभ का सिद्धांत निहित है। विशेष रूप से उन्होंने बुद्धिमत्ता और सभी के व्यवहार की अवधारणाओं के बीच संबंधों के पक्ष में दलील दी है। मैं अधिक विशिष्ट दावों को पहले बताए गए कारणों की वजह से स्वीकार नहीं करता। लेकिन अधिक सामान्य दावा पर्याप्त रूप से स्वीकार्य है। एक बार फिर यह इसलिए है क्योंकि बुद्धिमत्ता और अवधारणा पर अधिकार में संबंध है। अवधारणा पर अधिकार होने का अर्थ है अन्य चीजों के साथ रहते हुए उसके विभिन्न रूपों को एक ही रूप में देख पाना। 'लचीलापन' अवधारणा पर अधिकार का ही एक गुण है उस सीमा तक जब तक कि अवधारणा निर्माता अपनी अवधारणा को किसी एक चीज के बारे में सख्ती से लागू करने के लिए तैयार होता है या उसी प्रकार के बहुत से अन्य मामलों में। अब एक अवधारणा के अंतर्गत आने वाली मिसालों की असमानता अन्य अवधारणाओं के आधार पर भिन्न हो सकती है। कुछ अवधारणाओं में बहुत भिन्न प्रकार की चीजें उदाहरण हो सकती हैं (उदाहरणार्थ खेल, मेज, नीला) अन्य में बहुत समान चीजें हो सकती हैं या एक जैसी भी (जैसे कि पारसमुद्रीय)। असमानता के कारण कोई भी अवधारणा कमतर नहीं होती; अवधारणा का स्वत्व तब भी लचीलापन लिए होता है जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है। बुद्धिमत्ता की चर्चा के लिए इन बिन्दुओं को लागू करना और रोजमर्रा का व्यवहार स्पष्ट होना चाहिए। ताले में चाबी लगाने के लिए चाबी को निश्चित तरह से पकड़ना होता है ताकि उद्देश्य को पूरा किया जा सके। इस नियम को समझने के बाद व्यक्ति इसे बार-बार लागू कर सकता है, जब भी वह ताले में चाबी लगाता है, बावजूद इसके कि जिन परिस्थितियों में नियम को लागू करता है वे आमतौर पर एक जैसी होती हैं। बुद्धिमत्तापूर्ण तर्क करने के लिए बहुत-सी विभिन्न किस्म की चीजें होती हैं जैसा कि हम देख चुके हैं जो उद्देश्य प्राप्त करने में सहायक या असहायक हो सकती हैं। इस उदाहरण में अनुवर्ती धारणा ज्यादा अलग है। दोनों प्रकार के व्यवहार बुद्धिमत्तापूर्ण हो सकते हैं, क्योंकि दोनों में ही लचीलेपन की जरूरत होती है जिसका वर्णन ऊपर किया गया है। यह आग्रह कि भिन्नता और लचीलेपन को अवधारणा का अंतरंग हिस्सा बनाया जाए विशिष्ट प्रकार की बुद्धिमत्तापूर्ण क्रिया का सामान्य प्रकार की बुद्धिमत्तापूर्ण क्रिया के साथ सम्मिश्रण होगा जो प्रायः उपरोक्त वर्णित 'मिथ्या हठ' करने से होता है।

कोई आपत्ति उठा सकता है कि मैंने यहां एक महत्त्वपूर्ण तर्क की अनदेखी की है कि कोई रोजमर्रा के कार्यों की बुद्धिमत्ता को क्यों चुनौती देगा। मुख्यतः उनकी 'एकल पथ' प्रकृति यहां प्रासंगिक नहीं है बल्कि यह तथ्य कि क्योंकि वे सकलपंथी हैं, वे स्वतः क्रिया को संपन्न कर सकते हैं क्योंकि यह उनकी आदत में हैं। बुद्धिमत्ता का अभी तक जो विवरण दिया गया है, उसे स्वीकार करते हुए यह माना जा सकता है कि पहली

बार जब कोई ताले में चाबी लगाता है तो वह बुद्धिमत्तापूर्ण तरीके से करता है, जिसमें वह निर्णय करता है कि उसका अस्तित्व एक खास स्थिति में उसके लक्ष्य से जुड़ा हुआ है। लेकिन क्रिया जितनी अधिक आदत बनती जाती है उतना ही कम इसे बुद्धिमत्ता से संबंध कहा जाएगा, क्योंकि ऐसे निर्णयों को वह बिना सोचे संपन्न कर देता है। दूसरे शब्दों में, 'संबंध देखने में अभिव्यक्त विचार को घटित होने के अर्थ में लिया जाना चाहिए : बुद्धिमत्ता के साथ काम करने में संबंध देखना (अर्थात् समझना) पर्याप्त रूप से नहीं आ जाता; संबंधों के प्रति सचेत भी होना चाहिए, तुरंत और उसी वक्त।

इस बात से मैं सहमत हूं कि यदि हम बुद्धिमत्ता से काम करने की बात करते हैं तो हमें 'देखने' की घटित होने के भाव से व्याख्या करनी चाहिए। लेकिन मैं इससे सहमत नहीं हूं कि स्वचालित किस्म के सही व्यवहार में इस अर्थ में संबंधों को देखना नहीं होता होगा। कुछ संबंधों को पहले से मानकर चला जा सकता है। उदाहरण के लिए, चाबी घुमाने वाला लगातार चाबी की अवस्था और उसके सफल घुमाव के बीच संबंध नहीं देखता रहता है। लेकिन कम से कम उसे हमेशा चाबी की अवस्था को देखता होता है, हर बार जब वह उसे काम में लेता है जैसे कि अब ताले में डालने के पहले ठीक अवस्था में। 'स्वचालित' क्रिया कभी भी इस अर्थ में स्वचालित नहीं होती कि उसे तात्कालिक रूप से सचेत रहे बिना संपन्न किया जा सके।

मनोवैज्ञानिकों और दार्शनिकों दोनों के बीच बुद्धिमत्ता की परिभाषाओं में बड़ी विविधता सुपरिचित है जिसे कुछ लोग कुख्यात कहेंगे। अनेक लोग मानते हैं कि इस विषय के जितने लेखक हैं उतनी ही परिभाषाएं हैं। अवधारणा में बेहद घालमेल है जिसे नियंत्रित नहीं किया जा सकता। लेकिन ऊपर दिए गए विवरण से यह जाहिर होता है कि स्थिति उतनी निराशाजनक नहीं है। यह सही है कि कुछ कहेंगे कि जानवरों में बुद्धिमत्ता होती है और कुछ कहेंगे नहीं- रोजमर्रा के व्यवहार में और ऐसे व्यवहार में जो सामान्य अपेक्षाओं को नहीं लांघता है। कुछ इसे मनोवृत्ति की शब्दावली में परिभाषित करेंगे और कुछ संबंधों को देख पाने के अर्थ में। कुछ उसे साधन और साध्य व्यवहार तक सीमित कर देंगे, अन्य निर्णयों से संबंधित ऐसे कार्यों को शामिल कर लेंगे जो घटित होने वाली परिणति से संबंधित नहीं है। अब तक मतों की यह भिन्नता अर्थ की प्रकृति के कार्य में

यहां बुद्धिमत्ता की दो भिन्न अवधारणाएं हैं; यद्यपि एक-दूसरे से संबंधित हैं। (1) एक बुद्धिमत्तापूर्ण प्राणी वह है जो अवधारणाएं बनाने की क्षमता रखता है। (2) एक बुद्धिमत्तापूर्ण क्रिया वह है जहां कर्ता अवधारणाओं का सफलतापूर्वक प्रयोग करता हो।

भिन्न मिथ्या पूर्वमान्यताओं से उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए, (1) बुद्धिमान होने के आशय का विश्लेषण और उसके प्रयोग के लिए आवश्यक मानदण्डों पर चर्चा का जाहिरा सम्मिश्रण जो रायल के विवरण में मिलता है और वे जिन्हें उसने प्रभावित किया है तथा (2) अर्थ और प्रयोग का सम्मिश्रण जो उस विचार में मिलता है जो सामान्य अपेक्षाओं के पारगमन पर जोर देता है। इसके अतिरिक्त इन सब बहुत विभिन्न विवरणों में एक समान विचार जो बुद्धिमत्ता के अनेक आगे के विवरणों में भी विद्यमान है जिसकी चर्चा बाद में इस पर्चे में की जाएगी। जब मैं इस क्षेत्र के कुछ मनोवैज्ञानिक अध्ययनों पर विचार करूंगा। वह समान विचार है, सफल अवधारणा-अनुप्रयोग या संबंधों को देखना। कुछ विवरण निश्चित प्रकार के संबंधों को देखने पर केन्द्रित होते हैं (उदाहरण के लिए, साधन और साध्य के बीच) अन्य अवधारणाओं के प्रयोग को कुछ पहलुओं पर केन्द्रित किया जाता है। कुछ विवाद उस पर होते हैं कि (किसी चीज की) अवधारणा होने का मतलब क्या है (उदाहरणार्थ, पशु बुद्धिमत्ता पर विवाद)। कुछ लोग बुद्धिमत्ता को बहुत अधिक बौद्धिक मसला मानते हैं। प्लेटो में यह मिलता है जो देकार्त की परंपरा में है जिसका रायल विरोध करता है और बुद्धिमत्ता के परीक्षकों द्वारा निर्मित अनेक परीक्षणों में भी मिलता है। विरोध करने वाले शारीरिक कौशल के निष्पादन में प्रदर्शित अ-बौद्धिक बुद्धिमत्ता पर जोर देते हैं, जैसे कि टेनिस खेलना। यह असहमति अवधारणा और उसके अपने पास उपलब्ध होने के बारे में विचार की भिन्नताओं को जन्म दे सकती है। मैंने

पहले एक रूपरेखा दी थी जिसमें यह बात आवश्यक रूप से भाषा में प्रयोग से संबंधित नहीं है, कहा जा सकता है कि टेनिस का खिलाड़ी विविध प्रकार के प्रतीक संज्ञान में अवधारणाओं का प्रयोग करता है जो उसके खेल का एक बहुत बड़ा हिस्सा होता है (जैसा कि प्राइस का कहना है, प्रतीक-संज्ञान कोई ऐसी चीज नहीं है जो पशु व्यवहार तक ही सीमित हो, यह तो कुछ अत्यंत नफीस मानवीय गतिविधियों में महत्त्वपूर्ण भाग अदा करता है)।

इस विचार के आधार पर अवधारणाएं अपने पास होने के लिए इतना ही काफी है कि X को F की जगह देख सकें। उदाहरण के लिए, टेनिस गेंद की विशिष्ट उड़ान को इस प्रतीक के रूप में देखना कि वह इस तरीके से वापस लौटेगी। यदि फिर भी कोई आग्रह करता है कि इस प्रकार पहचान करने की योग्यता अवधारणा पर अधिकार के लिए पर्याप्त नहीं है पर यह भी कि अवधारणाओं के बीच संबंधों की समझ भी होना जरूरी है, तब प्रवृत्ति यह हो सकती है कि बुद्धिमत्ता के अनुप्रयोग को अधिक बौद्धिक मसलों तक सीमित कर दिया जाए। गणितीय और तार्किक किस्म की समस्याओं को हल करने की दिशा में जिन्हें, उदाहरणार्थ, बुद्धिमत्ता के परीक्षणों में देखा जाता है। इससे भी बड़ी बंदिश प्लेटो के आग्रह के परिणामस्वरूप होगी जिसमें कि 'अवधारणात्मक संबंधों' के प्रकार जिनकी 'अवधारणा पर अधिकार' के लिए जरूरत होती है जो समस्या का समाधान करने वाले की सीमा पार कर जाते हैं और वे दार्शनिकों के ही हो सकते हैं : यहां अवधारणात्मक संबंधों की उच्च कोटि की समझ से कम किसी चीज से काम नहीं चलेगा।

अब तक मैंने बुद्धिमत्ता और मूर्खता के बीच विषमता के बारे में कुछ नहीं कहा है। मूर्खतापूर्ण क्रिया वह है जहां किसी तरह से कर्ता प्रासंगिक अवधारणाओं को काम में नहीं लेता है। लेकिन केवल मूर्खता ही वैषम्य नहीं है। जब हम कहते हैं (ठीक या गलत) कि कुत्ते और बंदर बुद्धिमत्तापूर्ण पशु हैं लेकिन चीटियां और जीवाणु नहीं हैं तब हम निश्चित रूप से यह नहीं कह रहे होते हैं कि चीटियां और जीवाणु मूर्ख प्राणी हैं। यह कहने का निहितार्थ होगा कि उनके पास अवधारणाएं होती हैं लेकिन उनका प्रयोग करने में असफल होते हैं। लेकिन चीटियां चट्टानों की तरह अधिक बुनियादी अर्थ में, बुद्धिमतापूर्ण नहीं होतीं यानी कि वे इस प्रकार की जीवित सत्ता नहीं हैं जिनके पास प्रथमतया अवधारणाएं हों। इनका व्यवहार अवधारणा पर अधिकार की शब्दावली में नहीं समझाया जा सकता, केवल यांत्रिक प्रक्रियाओं में ही समझाया जा सकता है।

अतः यह स्पष्ट है कि यहां बुद्धिमत्ता की दो भिन्न अवधारणाएं हैं; यद्यपि एक-दूसरे से संबंधित हैं। (1) एक बुद्धिमत्तापूर्ण प्राणी वह है जो अवधारणाएं बनाने की क्षमता रखता है। (2) एक बुद्धिमत्तापूर्ण क्रिया वह है जहां कर्ता अवधारणाओं का सफलतापूर्वक प्रयोग करता हो। दरअसल एक तीसरा अंतर भी होता है। क्योंकि (1) और (2) के बीच अवधारणा पर अधिकार आता है। एक व्यक्ति (या पशु) कुछ निश्चित अवधारणाएं प्राप्त कर सकता है और वे उनका सफल या असफल प्रयोग करते हैं, पर यह आगे का सवाल है। किसी के पास शतरंज खेलने की अवधारणाएं हो सकती हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या वह किसी खास मौके पर शतरंज खेलता है। अवधारणा पर अधिकार एक तीसरे आशय के रूप में शायद रायल के इस विचार के बिलकुल करीब है जब वे 'बुद्धिमत्तापूर्ण होने का कोई काम कैसे करना है, की जानकारी होने के साथ जोड़कर देखते हैं।' बच्चों द्वारा बुद्धिमत्ता अर्जित करने के संबंध में बात करते समय या उनकी बुद्धिमत्ता (विकास) में बढ़ोतरी की बात करते समय दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक दोनों इसी आशय पर विश्वास करते हैं। इसके अलावा जब भी किसी से अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग करने के लिए कहा जाता है तब उस व्यक्ति की अवधारणात्मक संपदा से ही आशय होता है।

अतः बुद्धिमत्ता की हमारे पास तीन अवधारणाएं हैं; एक अंतर जिसके लिए मौलिकता में किंतु थोड़ा अलग रूप में हम अरस्तु के ऋणी हैं। (I) स्पष्टतः जैविक से आंरभ करते हुए हमारे पास अवधारणाएं बनाने के लिए बुद्धिमत्ता की क्षमता है। कुछ जानवरों में यह जन्मजात होती है किन्तु बाकी में नहीं और (II) अवधारणाओं को काम में लेने के लिए बुद्धिमत्ता की क्षमता होती है। यह (असलियत में) एक अर्जित क्षमता है और चूंकि विभिन्न गतिविधियां जैसे कि शतरंज खेलना या मछली पकड़ना या दर्शनशास्त्र का अध्ययन करना- अपने अवधारणात्मक औजार साथ लाती हैं, गतिविधि के अनुसार बुद्धिमत्ता विशिष्ट होनी चाहिए; सटीक निशानेबाजी में मेधा अर्जित की जा सकती है, लेकिन त्रिकोणमिति में इसकी कमी

रह सकती है। शायद इसलिए कि इसे कभी सीखा नहीं गया है, अंत में दक्षता प्राप्त करने के रूप में बुद्धिमत्ता है, अर्थात् अवधारणात्मक क्षमताओं का सही अनुप्रयोग जिसका वर्णन (II) के अंतर्गत ऊपर किया गया है।

(II)

ये फर्क 'प्रकृति-पोषण' की समस्या को समझने में कहां तक मदद करते हैं ? ऐसा लगता है कि जैसे इसका एक अत्यंत सरल हल हो सकता है। क्या बुद्धिमत्ता एक जन्मजात क्षमता है ? अच्छा तो इसके लिए किस अवधारणा को लिया जाए जिस पर यह निर्भर होगा ? अवधारणाएं निर्मित करने के लिए क्षमता के रूप में बुद्धिमत्ता प्रथम आशय के रूप में स्पष्टतः जन्मजात है, अन्य दो अर्थों में अर्जित है। मुझे संदेह है कि हेब कहां तक ठीक हैं जब वे 'बुद्धिमत्ता A और बुद्धिमत्ता B के बीच सुपरिचित अंतर करते हुए पूर्ववर्ती को परिभाषा द्वारा जन्मजात कहते हैं। सिद्धांत में मैं कोई तर्क नहीं देखता कि चींटियों में कोई तत्व नहीं डाला जा सकता ताकि उनमें अवधारणाएं बनाने की शक्ति आ जाती। तब उनमें यह क्षमता आ गई होती लेकिन जन्म से नहीं। लेकिन तर्क का न भी सही, मामले का सार यह कि बुद्धिमत्ता एक अर्थ में जन्मजात है और दूसरे अर्थ में अर्जित।

यह सोचने पर प्रसन्नता होगी कि 'प्रकृति-पोषण' का मुद्दा इतना जल्दी सुलझ सकेगा जैसा कि अब। लेकिन यदि ऐसा हो सकता! इसमें अटपटापन होगा क्योंकि यह सर्वाधिक आश्चर्यजनक होगा कि दीर्घकाल से लम्बित विवाद जो बहुत गरमागरम बहस का विषय रहा है और जिस पर लाखों विद्वतापूर्ण शब्द खर्च हुए हैं 'बुद्धिमत्ता' शब्द में एक साधारण अस्पष्टता से अधिक कुछ न निकाल पाया।

यह विवाद इससे भी अधिक गहरा है। यह जानने के लिए हमने इस पर्चे के आरंभ में लिए गए दो दावों में से प्रथम पर बारीकी से नजर डालनी होगी जिसमें पोषण की बजाय प्रकृति का समर्थन किया गया था। इनमें से दूसरे दावे को कि- बौद्धिक स्तर के अंतर को जन्मजात कारणों की अपेक्षा पर्यावरण से जुड़े कारण अधिक निर्णायक होते हैं, बाद में लूंगा। इसे वास्तव में पहले दावे के बाद प्रस्तुत किया गया था जिसे फ्रांसिस गाल्टोन के मूल विचार से लिया गया था और सिरिल बर्ट के लेखन में पाया गया था, अर्थात् बुद्धिमत्ता एक प्रकार की जन्मजात क्षमता होती है- बर्ट की शब्दावली में, कि यह 'जन्मजात, सामान्य संज्ञानात्मक योग्यता' होती है। 'जिस रूप में भी वे हैं, इसके बावजूद, यह स्पष्ट है और ऐसा मैं सोचता हूं कि इस तरह परिभाषित की गई बुद्धिमत्ता अरस्तु के तीनों भावार्थों में पहले के अर्थ में बुद्धिमत्ता नहीं है अर्थात् अवधारणाएं निर्मित करने की जन्मजात क्षमता के अर्थ में बुद्धिमत्ता नहीं है। बुद्धिमत्ता की गाल्टो-नियन अवधारणा का आंतरिक स्वरूप यह है कि व्यक्तियों में इस बुद्धिमत्ता को लेकर फर्क हो सकता है : एक व्यक्ति दूसरे से अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण हो सकता है। बुद्धिमत्ता की अवधारणा में यह नहीं लिखा गया है कि बुद्धिमत्ता की संभावित श्रेणियां होती हैं जैसे कि अवधारणाएं निर्मित करने की (जन्मजात) क्षमता है। पशुओं, व्यक्तियों सहित, के पास या तो ये क्षमताएं होती हैं या नहीं होती हैं। सभी इंसानों के पास ये क्षमताएं होती हैं।

एक संभावित घालमेल से बचने के लिए यहां भाषा से संबंधित एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु रखना जरूरी लगता है। मैं गाल्टोन या बर्ट के विपरीत एक विचार रख रहा हूं, यह कहने का कोई अर्थ नहीं है कि इंसान (वे सब यानी जो अवधारणाएं निर्मित करने की क्षमताएं रखते हैं) जन्मजात क्षमता में अलग-अलग होते हैं जैसा कि मैंने 'क्षमता' को अब तक परिभाषित किया है। लेकिन 'क्षमता' एक अस्पष्ट शब्द है। एक अर्थ में इसका साधारण-सा मतलब है 'ताकत' : इंसान अवधारणाएं निर्मित करने की ताकत के साथ पैदा होते हैं, पौधों और चट्टानों में यह शामिल नहीं होती। लेकिन एक दूसरे अर्थ में, इसका मतलब इससे कहीं ज्यादा है। उदाहरण के लिए, इसे कहने में कि इस दूध की बोतल में एक लीटर की 'क्षमता' है, इसमें ताकत है लेकिन इससे अधिक महत्त्वपूर्ण यह भी है कि इससे अधिक समाने की ताकत इसमें नहीं है। दूध को समाने की इसमें ऊपरी सीमाएं हैं।

बुद्धिमत्ता की गोल्टोनी अवधारणा को बाद के दो अर्थों में जन्मजात क्षमता को देखते हैं। हम सिर्फ अवधारणात्मक ताकतों के साथ पैदा नहीं होते, बल्कि व्यक्तिगत रूप से भिन्न ऊपरी सीमाओं के साथ जिसके परे हम विकसित नहीं हो सकते। हममें से प्रत्येक केवल इतना ही बौद्धिक बोझ वहन कर सकता है; हममें से कुछ क्वार्ट हिस्सा, दूसरे एक लीटर के बराबर और अन्य लीटर का चौथाई भाग। बुद्धिमत्ता की ऐसी अवधारणा का एक हाल ही का उदाहरण सिरिल बर्ट के परचे

में मिलता है जो 1955 में लिखा गया था और वाइजमेन की *इन्टेलिजेन्स एण्ड एबिलिटी* में पुनर्मुद्रित हुआ था। बुद्धिमत्ता को 'एक सहज, सामान्य, संज्ञेय कारक' के रूप परिभाषित करने के बाद, बर्ट लिखते हैं; बुद्धिमत्ता की जिस मात्रा के साथ कोई विशिष्ट बच्चा प्रदत्त होता है वह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारणों में से होता है जो उसकी जिन्दगी भर की सामान्य कार्यक्षमता को निर्धारित करता है। विशेष रूप से यह ऊपरी सीमा तय करता है जहां तक वह सफलतापूर्वक कार्य निष्पादन कर सकता है, खासतौर से शैक्षिक, व्यावसायिक और बौद्धिक क्षेत्रों में (पृ. 280-1)।

मैं बुद्धिमत्ता की गाल्टोनी अवधारणा और अरस्तु के अर्थों में अपनी प्रथम अवधारणा के बीच अंतर को बहुत ज्यादा बल देकर प्रस्तुत नहीं कर सकता। अरस्तु की शैली में यह कहना कि अवधारणाएं निर्मित करने की हमारे पास जन्मजात क्षमताएं होती हैं (या उनके बीच संबंधों को देखना) में यह निहित नहीं है कि किसी विशिष्ट व्यक्ति के लिए कोई ऊपरी सीमा है कि हम कौन-सी अवधारणाएं निर्मित कर सकते हैं या भिन्न संबंधों को चिह्नित कर सकते हैं। इसमें दूध की बोतल की 'क्षमता' के अर्थ में जन्मजात क्षमता निहित नहीं है। यह सच हो सकता है कि एक अर्थ में अवधारणा का प्रयोग करने वाला कोई भी प्राणी जो वह प्राप्त कर सकता है उसमें सीमित ही होगा। *क्रिटीक ऑफ प्योर रीजन* में कांट की धारणा से यदि हम सहमत हैं, तो हम सभी अपने सैद्धांतिक ज्ञान की परिधि में अनिवार्य रूप से सीमित होंगे यानी हमारे सामान्य अनुभवों की सीमा में जो भी आता है। यदि ऐसा है, बुद्धिमत्तापूर्ण प्राणी होना, अर्थात् अवधारणाएं निर्मित करने की जन्मजात क्षमताओं का होना, इनमें एक प्रकार की ऊपरी सीमाएं निहित होती हैं। यह अवधारणात्मक सत्य है, जिसे अनुभव निरपेक्ष रूप से स्थापित किया जा सकता है। कांट का विचार गाल्टोन के विचार से अलग है। कांट ऊपरी सीमाओं में व्यक्तिगत अंतरों की समानता का जिक्र नहीं करते हैं। अवधारणा का प्रयोग करने वाले सब प्राणियों के लिए सीमाएं समान हैं बतौर अवधारणा का प्रयोग करने वाले की सामान्य 'क्षमता' के कारण। गाल्टोनी अवधारणा में हम में से प्रत्येक की व्यक्तिगत विशेषता होती है जो हमारी समान्यता की जन्मजात ऊपरी सीमा द्वारा तय होती है।

गाल्टोनियन अवधारणा को अन्यों से अलग करने के बाद जिनसे बहुत जल्दी भ्रम पैदा होता है, हम इनका बारीकी से निरीक्षण करते हैं। ऐसा करने से, जैसा कि हम देखेंगे, 'प्रकृति-पोषण' के मुद्दे की जड़ तक पहुंच जाएंगे। इस नजरिए से बुद्धिमत्ता दूध की बोतल के अर्थ में जन्मजात संज्ञानात्मक क्षमता है।

गंभीर समस्या अब यह है : गाल्टोन के अर्थ में क्या बुद्धिमत्ता का अस्तित्व है ? स्पष्ट रूप से प्रमाण के बिना हम इसका अस्तित्व स्वीकार नहीं कर सकते। इस दावे की पुष्टि या खण्डन के लिए किस प्रकार के प्रमाण की आवश्यकता होगी ? अब इस बिन्दु पर हमें इस दावे को भागों में तोड़ना होगा : (I) पहला यह कि हम में से प्रत्येक के लिए बौद्धिक विकास की ऊपरी सीमाएं हैं (जो अलग व्यक्तियों की अलग-अलग हो सकती हैं) और दूसरा यह कि ये ऊपरी सीमाएं जन्मजात क्षमता ('बुद्धिमत्ता') से तय होती है। इन दोनों उप-दावों को प्रमाणिक समर्थन की आवश्यकता है।

इनमें से प्रथम पर पहले ध्यान केन्द्रित करते हैं। कौन से मानदंडों को पूरा करना होगा यह दिखाने के लिए कि इस अर्थ में किसी व्यक्ति की ऊपरी सीमाएं होती हैं (यह सीमा किस प्रकार उत्पन्न होती है, क्षण भर के लिए इस पर विचार किए बिना) ? अपने-आपमें निम्न उपलब्धि स्पष्ट रूप से एक मानदंड नहीं होगा। यदि कोई बच्चा ज्यामिति में कोई प्रमेय समझने में असमर्थ रहता है संभवतः पाइथागोरस की हम यह नहीं मान सकते कि यह समझ हमेशा उसके बस के बाहर होगी। हो सकता है यह उसे शायद कल समझ में आ जाए क्योंकि उसके शिक्षक ने उसे अलग तरह से समझाने की कोशिश की थी या कोई और भी कारण हो सकता है। लेकिन मान लीजिए, सिखाने के सभी तरीके अजमा लिए गए और कोई भी कारगर साबित नहीं हुआ। क्या यह दिखाने के लिए पर्याप्त होगा कि वह अपनी ऊपरी सीमा तक पहुंच चुका है ? क्या अब यह भी हमेशा ऐसी संभावना नहीं बनी रहेगी कि कोई तरीका कारगर साबित हो जाए जिसकी जानकारी अभी हमें नहीं है ? मैं मानता हूं कि ऐसी संभावना हमेशा होती है। लेकिन मुझे लगता है कि एक मुकाम पर पहुंचने के बाद (और मुझे स्पष्ट नहीं है कि वह मुकाम कहां है) इस प्रकार के संदेह नाकारा साबित होते हैं। कुछ अति मानसिक कमियां भी बौद्धिक ऊपरी सीमाएं तय करती प्रतीत होती हैं जब वे प्रतीक संज्ञेयता के स्तर से बहुत आगे विकसित होने में

असमर्थ होती हैं, बहुत हुआ तो, चिह्नों का प्रयोग करने तक। यहां प्रमाण यह है कि तमाम तरह के विभिन्न तरीकों का इस बाधा को पार करने में असफल होना। शायद यह प्रमाण अपर्याप्त है। यदि ऐसा है, तब निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कम से कम कुछ लोगों की ऊपरी बौद्धिक सीमाएं हैं जिन्हें प्रमाणित नहीं किया जा सकता। मैं नहीं सोचता कि मैं यह कहना चाहता हूं। लेकिन गाल्टोनी दावा इससे ज्यादा कठोर है; यह नहीं कि कुछ बल्कि हम सभी सीमित हैं। क्या इस प्रस्ताव की जांच की जा सकती है ? एक कठिनाई यह है कि यह भी सामान्य और मानसिक व्यक्तियों पर लागू होती है और सामान्य व्यक्तियों के बारे में यह बताना तो और ज्यादा मुश्किल है कि जिस मानदंड की मैं बात कर रहा हूं वह कब पूरा हो गया है क्योंकि मानसिक खामी वाले व्यक्तियों से भिन्न, सामान्य व्यक्तियों के पास अवधारणात्मक उपकरण होता है जिसका उपयोग शिक्षक बौद्धिक बाधाओं को पार करने हेतु विभिन्न तरीकों को विकसित करने के लिए कर सकते हैं। मुझे यह स्पष्ट नहीं है कि यदि संभव है तो यह निष्कर्ष निकालना कब न्यायसंगत होगा कि सामान्य व्यक्ति की ऊपरी सीमा कब आ गई है और इसके आगे सिखाने के और प्रयास नाकारा होंगे।

इस दावे की जांच करने में एक और कठिनाई यह है कि सभी की ऊपरी सीमाएं हैं, इससे लगता है कि कम से कम एक व्यक्ति तो अवश्य ऐसा होना चाहिए जिसकी ऊपरी सीमाएं न दिखाई जा सकें (हमेशा यह मानते हुए कि ऊपरी सीमाएं सामान्य तौर पर निश्चित की जा सकती हैं)। क्योंकि यह स्थापित करने के लिए कि ऊपरी सीमाएं हैं, कोई उन सब प्रयासों में विफल रहा है जो उसने उसे सीमाओं से बाहर ले जाने के लिए किए हैं- इसका निहितार्थ यह है कि कोई अपने को अवधारणात्मक प्रक्रिया में उस बिन्दु से परे ले जा सकता है। इसलिए कम से कम एक व्यक्ति ऐसा अवश्य होना चाहिए जिसे यह नहीं दिखाया जा सके कि उसकी ऊपरी सीमाएं हैं। क्योंकि यदि ऐसा कोई व्यक्ति है ही नहीं, तब कौन दिखा सकेगा कि एक व्यक्ति या अधिक लोग सर्वाधिक ऊपरी सीमाओं के साथ ऐसे हैं जिनकी इस प्रकार की ऊपरी सीमाएं हैं ?

इसलिए ऐसा लगता है जैसे कि दावा जिसका हम परीक्षण कर रहे हैं सिद्धांतः सत्यापित नहीं किया जा सकता। लेकिन न ही ऐसा लगता है कि सिद्धांत में उसे गलत ठहराया जा सकता हो। हम सबकी ऊपरी बौद्धिक सीमा है, इस बात को संभवतः असत्य कैसे ठहराया जा सकता है ? जितना मैं सोच सकता हूं, ऐसा कुछ भी नहीं है। यदि हम दुनिया के सर्वाधिक मेधावी व्यक्ति को लें, नए विचारों पर जिसकी पकड़ असीमित है तो यह भी इसे असत्य साबित करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा।

यदि यह तर्क सही है तो यह प्रस्ताव कि हम सबकी योग्यता की अपनी ऊपरी सीमाएं हैं, सिद्धांततः न तो सत्यापित किया जा सकता है और न ही असत्य ठहराया जा सकता है। इसलिए भी क्या यह प्रस्ताव कि हम सबकी ऊपरी सीमाएं प्राकृतिक रूप से निर्धारित हैं अर्थात् गाल्टोनियन बुद्धिमत्ता जैसी चीज है। इसलिए भी वास्तव में अधिक विशिष्ट दावा कि हम सबकी ऊपरी सीमाएं हैं जो एक सामान्य लोचदार रेखा की तरह भिन्नता लिए हैं। यह कहना कि ये प्रस्ताव सिद्धांतः सत्यापित या असत्य साबित नहीं किए जा सकते इस बात को रेखांकित करता है कि ये आनुभविक परिकल्पना नहीं हो सकते। बल्कि वे कांट के अर्थ में अधि-भौतिक अनुमान हैं यानी कि संभव अनुभव की सीमा बांध जाते हैं। प्रत्यक्षवादी यह दावा कर सकते हैं कि ये अर्थहीन अभिव्यक्तियां हैं। अभिप्राय के सिद्धांत के सत्यापित नहीं होने के कारण मैं इस सीमा तक नहीं जाना चाहूंगा। लेकिन उनकी असत्यापनीयता और उनकी असत्यता न सिद्ध कर पाने में वे इस दावे के समान हैं कि जो भी करते हैं उसके पीछे कोई अचेतन अभिप्रेरण होता है, यह एक ऐसी परिकल्पना है जिसे कुछ फ्रायड के समर्थक मानते हैं। या यह दावा कि प्रत्येक ऐतिहासिक घटना पहले से ईश्वर द्वारा तय कर दी जाती है या आर्थिक ताकतों का परिणाम है। या यह दावा कि ईसा मसीह ईश्वर का पुत्र है। ये सब दावे, जैसा कि मैं समझता हूं, सही हो सकते हैं। लेकिन कोई भी संभव प्रमाण इसे सही या गलत सिद्ध नहीं कर सकता।

इस प्रकार के प्रस्ताव आस्था की आदर्शवादी व्यवस्थाओं के केन्द्र में अक्सर पाए जाते हैं, उदाहरणार्थ मार्क्सवाद, ईसाईगत, मनोविश्लेषक सिद्धांत। यह आश्चर्यजनक नहीं है। यह कहना कि 'ईश्वर का अस्तित्व है', एक ऐसी प्रस्तावना है जिसे असत्य सिद्ध नहीं किया जा सकता यानी कोई भी अच्छा प्रमाण इस दावे के पक्ष में नहीं दे सकता कि यह सही नहीं है या यह कहना कि इसकी सच्चाई से तार्किक रूप से इंकार नहीं किया

जा सकता। लेकिन यदि इसकी सच्चाई से तार्किक रूप से इंकार नहीं किया जा सकता, इसकी सच्चाई निश्चित रूप से अखण्डीय है, ऐसी स्थिति में इस निष्कर्ष की ओर झुकाव हो सकता है, *यह अवश्य ही सच होना चाहिए।*

धार्मिक और राजनैतिक प्रस्तावों की तरह मैंने उल्लेख किया है कि यह प्रस्ताव कि हम सभी की अपनी बौद्धिक सीमाएं जन्म से ही तय हैं, एक नई विचारधारा के तंत्र का केन्द्र बन गया है। इसके चारों तरफ भी हर प्रकार के अन्य प्रस्ताव जुड़ते गए हैं। दो प्रकार की विवरणात्मक उदाहरण के लिए, बौद्धिक स्तर की निरंतरता के बारे में आदि-आदि और आदेशात्मक, उदाहरणार्थ, विभिन्न प्रकार के शैक्षिक प्रावधान जिन्हें विभिन्न, 'जन्मजात क्षमताओं' के बच्चों के लिए किया जाना चाहिए। जैसे-जैसे ऐसा तंत्र जटिल होता हुआ बढ़ता जाता है और इसके समर्थक विस्तार में, तंत्र के अधिक गौण हिस्सों के बारे में विमर्श में संलग्न होते हैं, अधिक संभावना यह होती है कि इसके गौण हिस्सों में पूर्व में मान लिए गए बुनियादी विश्वासों को यों ही स्वीकार कर लिया जाता है और उन पर प्रश्न उठाना या उन्हें त्याग देना और भी कठिन कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि दो व्यक्ति बहस कर रहे हों कि ईश्वर एक व्यक्ति है या तीन तो उनमें से प्रत्येक का पक्का विश्वास होता है कि ईश्वर है। यदि अन्य दो लोग, उदाहरणार्थ, बहस कर रहे हों कि किसी व्यक्ति का बौद्धिक स्तर उसकी अपनी बौद्धिक सीमाओं का प्रमाणिक संकेत है तो उनमें से प्रत्येक का पक्का विश्वास होता है कि इस प्रकार की अपनी सीमाएं होती हैं।

अब मैं इस सबका संबंध दूसरे दावे की चर्चा के साथ बिठाना चाहता हूं जो 'प्रकृति' के पक्ष में दिया गया था जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है- यह दावा कि बुद्धिमत्ता में व्यक्तिशः अंतर ज्यादातर आनुवांशिक प्रभावों से तय होता है। 'अन्ततः' कुछ लोग सोच रहे होंगे कि : 'यही तो निश्चित रूप से 'प्रकृति-पोषण' का मुद्दा है जिसके बारे में इतनी बात की जा रही है। हमारी बौद्धिक सीमाएं हैं या नहीं जहां का तहां है। बात क्या है, बुद्धिमत्ता में वैयक्तिक अन्तर किस सीमा तक (बौद्धिक स्तर पर जाएं तो) जन्मजात या 'पर्यावरणीय' कारकों द्वारा तय होते हैं।

लेकिन क्या यह 'प्रकृति-पोषण' का मुद्दा है ? मान लीजिए एक सूची तैयार करते हैं। एक प्रमुख विचार आज यह दावा करता है कि पर्यावरणीय कारकों की अपेक्षा आनुवंशिक कारक 3:1 के अनुपात में अधिक प्रभावी होते हैं। मान लीजिए, कोई आनुवंशिकता के इस प्रभाव को चुनौती देता है, यह तर्क देते हुए कि पर्यावरणीय कारक अधिक प्रभाव डालते हैं। इस बहस में हिस्सा लेने के लिए किसी व्यक्ति की, यदि हो तो, क्या प्रतिबद्धता हो सकती है ?

यह जानने के लिए हमें बारीकी से देखना होगा कि मतलब क्या है जब हम कहते हैं कि बुद्धिमत्ता में व्यक्तिशः अंतर अधिकांशतः आनुवांशिक कारकों से तय होते हैं। सबसे पहले तो 'बुद्धिमत्ता' को यहां 'मापी गई बुद्धिमत्ता' के अर्थ में प्रयोग किया गया है : कोई व्यक्ति उच्च (या निम्न) बुद्धिमत्ता का है, इस परिभाषा के अनुसार, आमतौर पर कोई भी व्यक्ति उच्च (या निम्न) बौद्धिक स्तर का है। महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि इस तकनीकी अर्थ में बुद्धिमत्ता का परीक्षण आम भाषा में किया जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि यह ज्यादा से ज्यादा सीमित क्षेत्रों में बुद्धिमत्ता का परीक्षण करता है वह भी औपचारिक तार्किक संबंधों में यह बुद्धिमत्ता का परीक्षण नहीं करता जैसे कि एक मुक्केबाज की या टेनिस के खिलाड़ी की। इसको अतिरिक्त, एक परीक्षण में निम्न प्राप्तांक मेरे अरस्तुवादी के अर्थ में दूसरे और तीसरे स्तर की बुद्धिमत्ता में अंतर करने में असमर्थ रहता है। अर्थात् यह परीक्षार्थी के उत्तर मात्र से प्रमाणित नहीं होता कि उसने निम्न अंक इसलिए प्राप्त किए क्योंकि उसके पास परीक्षण हेतु इस प्रकार की अवधारणात्मक समझ और कौशल नहीं था या कि उसके पास समझ और कौशल तो था लेकिन इस बार वह उसे प्रयोग करने में असफल रहा।

इन संदेहों को एक तरफ करने पर भी यह बिलकुल स्पष्ट नहीं है, यह कहने का क्या अर्थ होता है कि बौद्धिक स्तरों में वैयक्तिक अंतर अधिकांशतः आनुवांशिक कारकों द्वारा तय होते हैं। विशेष रूप से ऐसा तब है जब यह माना जाता है कि भिन्नता का 50 प्रतिशत आनुवांशिक प्रभाव से तय होता है और 50 प्रतिशत पर्यावरण से (इससे संबंधित साहित्य में अनुपात 75 : 25 'प्रकृति' के पक्ष में है)। क्या कारण प्रधान कारकों को मात्रात्मक रूप में रखा जा सकता है ? मान लीजिए, हम पूछते हैं कि गोदाम में आग कैसे लगी ? क्या यह कहना सार्थक होगा कि 50 प्रतिशत जलती सिगरेट से और 30 प्रतिशत ज्वलनशील सामग्री आदि से आग लगी। इसमें मुझे

कोई ज्यादा अर्थ नहीं लगता, न तो इस उदाहरण में और न ही बुद्धिमत्ता के मामले में।

यदि हम निश्चित अनुपातों को छोड़ दें तो हम कम से कम प्रश्न में किए गए दावे को कुछ अर्थ प्रदान कर सकते हैं। निश्चय ही यह कहने का कुछ मतलब होता है कि वयस्क व्यक्तियों की लम्बाई अधिकांशतः आनुवांशिक कारणों से तय होती है, पर्यावरण से ज्यादा इनसे तय होती है। फिर यह प्रश्न करना अबुद्धिमत्ता की तरफ जाएगा कि इसका निश्चित अनुपात क्या है ? क्योंकि इस मामले में यह कहने का आशय कि पर्यावरर्णीय की बजाय आनुवांशिक कारक अधिक प्रभाव डालते हैं, यह नहीं है कि वे कारण प्रधान कारकों की कुल मात्रा में 50 प्रतिशत से अधिक के लिए जिम्मेदार हैं, लेकिन वे हर व्यक्ति के शारीरिक विकास की ऊपरी सीमा तय करते हैं, जबकि पर्यावर्णीय कारक, यथा भोजन, लोगों की बढ़वार में केवल उस सीमा के नीचे काम करते हैं या उनकी बढ़वार वहां तक जाती है।

बुद्धिमत्ता के लिए इसका अनुप्रयोग स्पष्ट हो जाना चाहिए। मेरा विश्वास है कि बौद्धिक स्तर में व्यक्तिगत अंतर अधिकांशतः जन्मजात कारणों से तय होते हैं, का तभी कोई अर्थ निकलता है, जब इसका अभिप्राय यह हो कि जन्मजात कारकों द्वारा व्यक्ति के बौद्धिक विकास की ऊपरी सीमा तय होती है जबकि पर्यावरर्णीय कारक केवल आनुवांशिक कारकों द्वारा तय किए गए ढांचे के अंतर्गत ही काम करते हैं। लेकिन इसमें गाल्टोनी अर्थ में बुद्धिमत्ता के अस्तित्व की पूर्वमान्यता निहित है कि हर व्यक्ति की विभिन्न ऊपरी बौद्धिक सीमाएं हैं। जो भी व्यक्ति यह जानना चाहता है कि जन्मजात या पर्यावर्णीय कारकों में से कौन अधिक प्रभावशाली है वह समान रूप से दोनों में विश्वास करता है। इस मुद्दे पर बहस में शामिल ही होना हो तो वह सहजातीय की विजय को ही स्वीकार करेगा क्योंकि जिस विश्वास का परीक्षण नहीं हो सकता उसी को स्वीकार करना होता है और यही उनकी अपनी स्थिति की आधार भूमि होती है। शायद यह अधिक तार्किक होता है कि किसी की तरफदारी न की जाए या कम से कम प्रकृति प्रदत्त स्थिति पर 'पर्यावरण' का पक्ष लेकर आक्रमण न करते हुए (आखिर इसका क्या मतलब होगा यदि यह कहें कि पर्यावर्णीय कारकों का योगदान 60 प्रतिशत हो सकता है ?) बजाय इसके कि अपरीक्षणीय मान्यता की ओर ध्यान दिलाया जाए कि जिस पर संपूर्ण प्रकृति प्रदत्त स्थिति निर्भर करती है। यह दावा कि व्यक्तियों के बौद्धिक स्तर में 75 प्रतिशत भिन्नता के लिए आनुवांशिक कारण जिम्मेदार है; बड़ी सीमा तक जुड़वां व्यक्तियों के अध्ययनों पर आधारित है। यदि ऐसा लगता हो कि मैं इन अध्ययनों का प्रत्यक्ष संदर्भ न देकर इन्हें नजरन्दाज कर रहा हूं तो मुझे एक-दो मिनट इसी साक्ष्य पर लगाने की अनुमति दें। तर्क का एक हिस्सा यह है कि जुड़वां व्यक्तियों का पालन-पोषण अलग-अलग किया गया था लेकिन उनके बौद्धिक स्तर में उच्च संबंध (0.75) पाया गया है। चूंकि उनके पर्यावरण बहुत भिन्न हैं, बौद्धिक स्तर में समानता को स्पष्ट करने के लिए उनके समान कारकों को लिया जा सकता है जो आनुवांशिक रूप से उन्हें प्राप्त हुए हैं।

जितना मैं समझता हूं यह तर्क न्यायोचित मान्यता पर आधारित नहीं है। मान लीजिए, दो जुड़वां पैदा हुए व्यक्तियों के बीच बौद्धिक स्तर में 0.75 का सहसंबंध वास्तव में पाया जाता है या मान लीजिए, मुद्दे को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम कहे कि दोनों के बौद्धिक स्तर के बीच 1.0 का सहसंबंध है; जुड़वां में से प्रत्येक का बौद्धिक स्तर उन्हीं माता-पिता के दूसरे जुड़वां दो व्यक्तियों के बिलकुल समान है। यह भी अपने-आपमें आनुवांशिक का समर्थन नहीं करेगा। क्योंकि मान लीजिए दोनों जोड़ों में से एक-एक को बुद्धिमत्ता परीक्षण में जवाब देने का अनुशिक्षण किया जाता है और परिणामस्वरूप इन दोनों का और अन्य दो को दोबारा परीक्षण किया जाता है तो जिनका अनुशिक्षण हुआ है उनका औसत बौद्धिक स्तर 20 बिन्दु उनसे ज्यादा रहा है जिनका अनुशिक्षण नहीं हुआ है। निःसंदेह इससे दोनों जुड़वां व्यक्तियों के बीच बौद्धिक स्तर का सहसंबंधी काफी कम हो जाएगा। इस प्रकार जुड़वां व्यक्तियों पर किए गए वास्तविक शोध में निहित मान्यता यह है कि किन्हीं भी जुड़वां व्यक्तियों के बौद्धिक स्तरों में 0.75 के सहसंबंध में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन लाना संभव नहीं है। लेकिन जितना मैं जानता हूं, यह मान्यता बिलकुल निराधार है। कोई विभिन्न प्रयास नहीं किए गए हैं और जो हुए हैं वे सहसंबंध द्वारा जुड़वां व्यक्तियों के बौद्धिक स्तर में परिवर्तन लाने में असफल रहे हैं। जुड़वां व्यक्तियों के शोध यह दर्शाने में बिलकुल असफल रहे हैं कि लोगों की अपनी बौद्धिक सीमाएं होती हैं, लेकिन मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि मान्यता शोध में निर्मित कर दी गई।

'प्रकृति-पोषण' की बहस में वास्तव में मुद्दा क्या है, इसकी खोज में मैंने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि मूल मुद्दा यह है कि हम सबकी ऊपरी सीमाएं हैं अथवा नहीं और यह कि इसे तय नहीं किया जा सकता। मैंने इस सुझाव का खंडन करने का प्रयास किया है कि मुद्दा यह है कि आनुवांशिक कारक पर्यावर्णीय कारकों से अधिक प्रभावशाली हैं अथवा नहीं क्योंकि यदि मुद्दा यह है कि आनुवांशिक कारक पर्यावर्णीय कारकों से अधिक प्रभावशाली हैं अथवा नहीं क्योंकि यदि इसे मुद्दा बनाते हैं तो हम इस मान्यता को पहले मान रहे होते हैं। किन्तु 'प्रकृति-पोषण' विवाद एक भिन्न मुद्दे के इर्द-गिर्द भी घूमता और प्रस्तुत किया जाता रहा है; मुद्दा यह है कि किसी का बौद्धिक स्तर 'स्थायी' होता है या नहीं अर्थात् व्यक्ति के संभाव्य विकास की ऊपरी सीमा प्रस्तुत करता है या नहीं। यदि बौद्धिक स्तर को बेहतर बनाया जा सकता है, तो यह बात 'पोषण' की बजाय 'प्रकृति' के पक्ष में जाएगी। हंट अपने *इन्टेलिजेन्स एण्ड एक्सपीरियेन्स* में हर मुद्दे को इसी तरह लेते हैं। जिसे वे 'स्थायी बुद्धिमत्ता में विश्वास' कहते हैं, इसी के पक्ष और विपक्ष में तर्कों की विवेचना करते हैं। उनका 'स्थायी बुद्धिमत्ता के विपरीत साक्ष्य' बौद्धिक स्तर की स्थिरता के विपरीत प्रमाण को शामिल करता है और स्कूली शिक्षा के कारण बौद्धिक स्तर में सुधार के प्रभाव की बात भी करता है। हंट के अनुसार 'प्रकृति-पोषण' मुद्दा ऐसा है जिसे अनुभविक शोध द्वारा तय किया जा सकता है। लेकिन मेरे विचार से यह विवाद की प्रकृति को विकृत करना होगा। प्राकृतिक बौद्धिक देन पर शोध साहित्य में हाल में जेक्सन और अन्यों द्वारा हुई वृद्धि दर्शाती है कि स्थायी बौद्धिक स्तर के प्रतिकूल हंट के पक्ष में कितने कम साक्ष्य मिले हैं जिन्होंने प्राकृतिक बौद्धिक देन को नुकसान पहुंचाया है। हाल ही के लेखकों की तरह यदि कोई दावा करता है, इसका अर्थ यह इंकार करना नहीं है कि पर्यावरर्णीय कारकों का भी कुछ प्रभाव पड़ता है; इसलिए व्यक्ति के बौद्धिक स्तर में सुधार का भी कुछ प्रभाव पड़ता है; इसलिए व्यक्ति के बौद्धिक स्तर में सुधार को इस सिद्धांत में आसानी से समाहित किया जा सकता है।

'प्रकृति-पोषण' का मुद्दा आनुभविक शोध से तय नहीं किया जा सकता। वास्तव में एक खतरा है कि शोध की गहराई में जाने से गाल्टोनियनों के हाथ मजबूत होंगे क्योंकि तब इस सिद्धांत की अकाट्यता से अपनी दृष्टि को हटाना पड़ेगा। हंट स्वयं इसका एक दिलचस्प उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वे इस विश्वास को खारिज करते हैं कि बौद्धिक स्तर किसी की ऊपरी मानसिक सीमाओं को बताता है और असल में अपनी पुस्तक में इसके कुछ प्रमाण भी देते हैं कि वे गाल्टोनी बुद्धिमत्ता के अस्तित्व में विश्वास करते हैं। वे लिखते हैं, 'जीन व्यक्ति की संभाव्य बौद्धिक विकास की सीमाएं तय करते हैं लेकिन वे ऐसी कोई गारंटी नहीं देते कि यह संभाव्यता प्राप्त कर ली जाएगी और इसलिए बुद्धिमत्ता का स्तर भी निर्धारित नहीं करते जो सामान्य रूप से नापा जाता है। इसलिए विरोधाभास होते हुए भी हंट प्राकृतिक बौद्धिक देन के पाले में हैं। इसलिए 'प्रकृति-पोषण' मुद्दे को बौद्धिक स्तर के अंतरों पर आनुवांशिक या पर्यावर्णीय कारकों के सापेक्ष प्रभावों के विवादों में या बौद्धिक स्तर के स्थायित्व में ढूंढ़ना भ्रामक होगा। असली मुद्दा यह है कि हम सबकी अपनी ऊपरी सीमा है अथवा नहीं। लेकिन इसे मुद्दा कहना ही शायद अपने-आपमें भ्रामक है। क्योंकि इसे असत्य नहीं ठहराया जा सकता, कोई इस पर गंभीरता से बहस नहीं करना चाहेगा। ज्यादा से ज्यादा कोई इस तरफ इशारा कर सकता है। कुछ 'स्वयंभू पर्यावरणविद' गाल्टोनी सिद्धांत का खंडन करने की कोशिश इस दावे के साथ करते हैं कि योग्यता की कोई ऊपरी सीमाएं नहीं होती हैं। लेकिन मुझे लगता है कि यह बहुत दूर की कौडी पकड़ने के समान है, क्योंकि यह दावा उतना ही सत्यापनीय और तर्कसंगत नहीं है जितना यह कि ऐसी सीमाएं होती ही नहीं हैं : नास्तिकता का मुद्दा आस्तिकता से अधिक तार्किक नहीं है। शायद कुल मिलाकर 'प्रकृति और पोषण' का मुद्दा है ही नहीं क्योंकि इस स्तर पर तार्किक असहमति के लिए कोई गुजाइंश ही नहीं है। जिन्होंने गाल्टोनी दावे को सही माना है, उन्होंने विश्वास के क्षेत्रों में तार्किकता को तिलांजलि दे दी है। उनके पास कोई तर्क है ही नहीं। ◆

भाषान्तर : सुरेन्द्र कुशवाह

लेखक परिचय

ब्रिटेन के जाने-माने शिक्षा दार्शनिक। यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन के इन्सटीट्यूट ऑफ एज्युकेशन में शिक्षा दर्शन के प्रोफेसर।